osts

DR. DIPAK TUPE

+ NEW POST

- Posts
- Stats
- Comments
- Earnings
- Pages
- Layout
- Theme
- Settings
- Reading List
- View blog

Terms of Service · Privacy · Content Policy

All (4)

व	वर्तमान संदर्भ में तकनीकी शिक्षा की भूमिका Published • Jun 8, 2020
सा	सावधि पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजनात्मक सामग्री का ले Published • May 13, 2020
अ	अखबारी विज्ञापन - चिरंजीत - डॉ. दीपक तुपे Published • May 7, 2020
स्तं	स्तंभ लेखन की विशेषताएँ - डॉ. दीपक तुपे Published • May 7, 2020

VIVEKANAND COL. ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416 003

+

Scanned by CamScanner

DR. DIPAK TUPE

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

सोमवार, 8 जून 2020

वर्तमान संदर्भ में तकनीकी शिक्षा की भूमिका

डॉ. दीपक रामा तुपे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

वर्तमान संदर्भ में तकनीकी शिक्षा की अहम भूमिका निभा रही है। आज कई विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में वेब गोष्ठी, वेबिनार, ऑनलाइन कार्यशाला, फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्रेम, उन्मीखीकरण कार्यक्रम, पुनचर्या पाठ्यक्रम, प्रश्नमंजुषा पतियोगिता आदि का आयोजन ऑनलाइन प्लैटफॉर्म पर हो रहा है। कई विश्वविद्यालयों में ऑनलाइन परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है तो कई संस्थान कई ऑनलाइन पाठ्यक्रम चला रहे हैं। कई यू-ट्यूब चैनल, गूगल क्लासरूम यानी वचुर्अल क्लासरूम की दुनिया कई छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा देने की कोशिश कर रहे हैं।

आज तकनीक हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। बेशक तकनीक ने हमारे जीवन को काफी हद तक प्रभावित किया है और आसान भी बनाया है। स्कूल-कॉलेज भी इसके लिए अपवाद नहीं है। समय के साथ कदमताल करती तकनीक वर्तमान दौर में अध्ययन-अध्यापन का अभिन्न अंग बन चुकी है। हर छात्र मोबाइल, लैपटॉप, संगणक, इंटरनेट जैसी तकनीक का बखूबी उपयोग कर रहा है, मगर इन छात्रों के पास जानकारी का अथांग भंडार है; बस, कमी है ज्ञान की। जो ज्ञान आज वर्तमान तकनीक आधारित अध्ययन-अध्यापन पद्धति द्वारा आसानी से प्राप्त हो रहा है। अध्यापन की पद्धति चाहे कितनी भी पुरानी हो, मगर तकनीक का उपयोग से वह सशक्त बनती जा रही है। बेशक यही पारंपरिक अध्यापन पद्धति को तकनीक सशक्तता प्रदान करती है।

आज का युग तकनीक का युग है। आज तकनीक शिक्षण, प्रशिक्षण और अन्यान्य सभी महत्वपूर्ण क्रियाओं से संबंधित है; जैसे अनुदेशात्मक उद्देश्यों को निर्धारित करना, अधिगमसंबंधी योजना बनाना, शिक्षा एवं अधिगम सामग्री तैयार करना, ई-कंटेंट डेवलप करना, यूनिकोड फॉट, गूगल क्लासरूम, गूगल फॉम, गूगल डॉक, मूक, जूम, यू-ट्यूब चैनल, यू-ट्यूब और गूगल ड्राइव की फाइलों को साझा करना, रिकॉर्डिंग, उसका संपादन, स्क्रीन कैप्चरिंग, वीडियो निर्माण सॉफ्टवेयर, ऑनलाइन पाठ्यक्रम डिजाइन, ऑनलाइन असाइनमेंट, क्वीज, ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम, आडियो किताबें, वेब टूल्स, स्प्रेडशीट, स्लाइड प्रेजेंटेशन, ड्रॉईंग साझा आदि तकनीकी टूल्स पारंपरिक अध्यापन पद्धति को सशक्त करती हुई नजर आती है। छात्र ई-लर्निंग और ई-क्लासेस द्वारा अध्यापन कर रहे हैं। गूगल हिंदी इनपुट अंग्रेजी की-बोर्ड टंकन में सहयोग दे रहा है। ई-बुक के साथ साथ बोलती किताबों का भी प्रचलन बढ़ता जा रहा है। खास बात यह कि तकनीक के सहयोग से निर्मित मूक ऑनलाइन पाठ्यक्रम में कहीं भी और कभी-भी उपलब्ध हो रहे हैं।

- **गूगल क्लासरूम:**

यह क्लासरूम छात्रों के मूल्यांकन की और अध्यापन की एक बेहतरीन क्लासरूम है, जो कहीं भी और कभी भी उपलब्ध होती है। इसमें असाइनमेंट बनाना, वितरित करना, ग्रेड देना, शेड्यूलिंग किया जा सकता है, अध्यापन करना और ई-कंटेट प्रस्तुत करना आदि कार्य किए जाते हैं। इसके अलावा शिक्षक और छात्र चर्चा में शामिल हो सकते हैं। गूगल क्लासरूम कई स्कूल-कॉलेज, छात्र और अध्यापकों के लिए एक वेब सर्विस है। इसके लिए गूगल अकाउंट का होना जरूरी है। यह क्लासरूम अध्यापक का समय बचाती है और क्लास वचुर्अल रखने, छात्रों के साथ संवाद करने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। इस क्लासरूम मुफ्त एवं सुरक्षित होती है। यह एक सस्ता माध्यम है। यह क्लासरूम दीवारों को तोड़कर दुनिया के कोने-कोने तक पहुँच गई है।

- **गूगल फॉर्म :**

पेज

मुखपृष्ठ
Resume
Editor
Research
Syllbus
Workshop
वर्तमान संदर्भ में तकनीकी शिक्षा की भूमिका
Contact us

यह ब्लॉग खोजें

खोज

यह ब्लॉग खोजें

खोज

मुख्यपृष्ठ

मेरे बारे में

Dr. Dipak Tupe

मेरा पूरा प्रोफ़ाइल देखें

ब्लॉग आर्काइव

▼ 2020 (4)
▼ जून (1)
वर्तमान संदर्भ में तकनीकी शिक्षा की भूमिका
► मई (3)

फ़ॉलोअर

बुरे बर्ताव की शिकायत करें

Followers (2)

Follow

Scanned by CamScanner

गूगल फॉर्म मुक्त ऑनलाइन टूल है जिसका उपयोग सर्वेक्षण करने, क्वीज आयोजित करने, ऑनलाइन फॉर्म भरने, रिकॉर्ड सहजने के लिए किया जाता है। इसमें अलग-अलग थीम होती है जिससे आप अपने फॉर्म को आकर्षित कर सकते हैं। विभिन्न प्रकार डाटा इसमें कलेक्ट किया जा सकता है।

- **गूगल डॉक :**

गूगल डॉक नि:शुल्क वेब आधारित माध्यम है; जिसमें डाक्यूमेंट और स्प्रेडसीट को ऑनलाइन बनाया जा सकता है। गूगल डॉक के माध्यम से ऑनलाइन आलेख लेखन किया जा सकता है, फाइल को साझा किया जा सकता है, संपादित किया जा सकता है, फाइल देखी जा सकती है और जतन किया जा सकता है। गूगल डॉक द्वारा वाइस टाइपिंग, अनुवाद जैसे कार्य संभव हो रहे हैं।

- **गूगल स्लाइड :**

गूगल स्लाइड यह एक ऐसा प्रस्तुतीकरण का सहयोगी उपकरण माना जा सकता है जिसमें डिजाइन स्लाइड, शब्द संसाधन की स्टाइल, आडियो, वीडियो, इमेज शामिल किया जा सकता है। इस कहीं से भी और कभी बनाया जा सकता है। यह प्रस्तुतीकरण को बेहतर बनाने के लिए मददगार तकनीक कही जा सकती है। इसमें टिप्पणी भी की जा सकती है, उसे देख भी सकते हैं और संपादित भी कर सकते हैं। यह एक ऐसा साझा वर्क है जो दुनिया के विभिन्न कोने पर बैठे अनेक लोग एक साथ एक ही गूगल स्लाइड बना सकते हैं और अपने कंपनी, फर्म, संस्थान के प्रस्तुतीकरण को बेहतर बना सकते हैं। इतना ही नहीं, इसे एक-दूसरे को शेयर भी कर सकते हैं। सबसे अहम बात यह कि इसे कहीं भी प्रस्तुत किया जा सकता है। यह एक नि:शुल्क और अटोसेव तकनीक है। यह मिलजुलकर काम करने का बेहतर तरीका है।

- **गूगल सीट :**

गूगल सीट रंगीच चार्ट और ग्राफ के साथ अपने डाटा आकर्षक बना देता है। अंतर्निहित फार्म्यूला, बैलनसीट, सशर्त स्वरूपन, विकल्प आदि सुविधा गूगल सीट देता है। सामान्य स्पेडसीट कार्य को आसान बना देता है। यह नि:शुल्क है और कहीं से भी और कभी अपनी प्राप्त की जा सकती है। अपने फोन, टैबलेट, संगणक पर एक्सस किया जा सकता है और बनाया जा सकता है। इतना ही नहीं संपादित भी किया जा सकता है। इसमें अनेक लोग एक साथ मिलकर काम कर सकते हैं और समय बचत सकते हैं। सभी लोग एक साथ एक ही समय पर एक ही स्प्रेडशीट पर काम कर सकते हैं। यह सीट किसी को भी शेयर की जा सकती है और किसी भी सहयोगी को दिखाया जा सकता है और उस पर कॉमेंट ली जा सकती है।

- **स्लाइडो :**

स्लाइडो यह एक ऐसा अनलिमिटेड प्लेटफॉर्म है जो ऑनलाइन प्रश्नमंजूषा, सर्वे, पोल आदि कार्यों आसान बना देता है। यह वक्ता और श्रोता का एक पुल बन सकता है। व्यवसायिक, प्रशिक्षक, टिम वर्क के लिए एक बेहतरीन प्लेटफॉम है। यह अंतर्गत संवाद का एक माध्यम बन सकता है, लाइव बैठक का आयोजन किया जा सकता है, आडियो-वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का आयोजन किया जा सकता है, संवाद साझा कर सकते हैं, छात्र-शिक्षक लाइव विचार-विमर्श कर सकते हैं, फिडबैक लिया जा सकता है। इवेंट, क्लासेस और वेबिनार का बेहतरीन आयोजन स्लाइडो प्लेटफॉर्म पर किया जा सकता है। इसमें एक साथ एक ही समय पर एक हजार प्रतिभागी क्वीज दे सकते हैं।

- **जूम :**

जूम एक फ्री एचडी वीडियो कॉन्फेरेसिंग सॉफ्टवेयर है। यह एप मोबाइल तथा संगणक के द्वारा ऑनलाइन मिटिंग की जा सकती है। जूम ऑनलाइन बैठक, समूह बैठक, वेबिनार आयोजित किया जा सकता है। इसके अंतर्गत 100 लोगों के साथ बातचीत कर सकते हैं। इसमें वन-टू-वन मिटिंग, 40 मिनट गुरप कॉलिंग की सुविधा भी है।

- **यू-ट्यूब :**

यू-ट्यूट एक ऐसा वैश्विक मंच है जो ऑनलाइन किसी भी विषय की जानकारी प्रदान करता है। दुनिया के तमाम अध्यापक-प्राध्यापक अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया के लिए यू-ट्यूब का उपयोग कर रहे हैं और अन्यान्य क्षेत्र की जानकारी यू-ट्यूब के माध्यम से उपलब्ध हो रही है। यू-ट्यूब पर खुद का चैनल क्रिएट किया जा सकता है और उस पर विज्ञापन दिखाकर आय का स्रोत भी बनाया जा सकता है।

आज इंटरनेट पर गूगल ई-बुक, किंडल बुक और ई-लाइब्रेरी में हजारों की संख्या में किताबें हैं जो मुफ्त भी हैं और खरीदकर भी पढ़ सकते हैं। आप अपना प्रोफाइल पेज बनाकर उसे ऑनलाइन प्रकाशित कर सकते हैं। संबंधित पेज का डिजाइन कर सकते हैं और उसकी लिंक शेयर करके दूसरों को भेज भी सकते हैं। वाट्स एप, फेसबुक, आरकुट, इंस्टाग्राम, ई-मेल जैसे नव माध्यमों का उपयोग भी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है। मुफ्त में ऑनलाइन ब्लॉग शुरू कर सकते हैं, जिसमें आप अपने विचार दुनिया के सामने रख सकते हैं

★ VIVEKANAND COLLEGE ★ KOLHAPUR-416003 ESTD JUNE 1964

Scanned by CamScanner

और अधिकांश विवर होने पर विज्ञापन के द्वारा पैसे भी कमा सकते हैं। अपनी वेब साइट बनाकर भी उस पर अधिकांश मनचाहा जानकारी पेश कर सकते हैं।

सार यह कि विचार आत्मा की मूक बातचीत जब चिंतन रूप धारण कर प्रकट होती है तब उसे भाषा कहा जाता है। भाषा वह साधन है जो अध्यापक के भावों एवं विचारों को जन्म देती है। एक अध्यापक छात्रों ज्ञान प्रदान हेतु जो तरीके अपनाता है उसे अध्यापन की पद्धतियाँ कहा जाता है। तकनीकी इसी अध्यापन पद्धति को सक्षमता या सशक्तता प्रदान करती है। तकनीक के विभिन्न टूल्स शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ावा देते हैं।

- **Reference :**

1. www. Wikipedia.org

- जून 08, 2020 कोई टिप्पणी नहीं:

बुधवार, 13 मई 2020

सावधि पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजनात्मक सामग्री का लेखन :

- सावधि पत्रिका यानी निश्चित अवधि में प्रकाशित होने वाली पत्रिका। इनमें दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्रिकाएँ, द्वि-मासिक, त्रैमासिक, छमाही, अनियमित कालीन पत्रिका आदि पत्रिकाएँ इसमें आती है। ये पत्रिकाएँ विभिन्न समाचार अपने तयशुदा अंतराल के बाद प्रकाशित करती रहती हैं।

1) दैनिक समाचार पत्र :

इस श्रेणी में प्रतिदिन के समाचारों को प्रकाशित करने वाले समाचार पत्र आते हैं। इन पत्रों में आज की कुल घटनाओं को संकलित कर दूसरे दिन प्रात: पाठकों को प्रस्तुत किया जाता है। कुछ दैनिक पत्र आज के समाचार आज दोपहर तक भी दे देते हैं। ऐसे पत्रों को मिड-डे समाचार पत्र कहते हैं। कुछ समाचार पत्र आज के समाचारों को उसी दिन शाम के सात बजे तक पाठकों के समक्ष रख देते हैं। ऐसे पत्रों को साध्य दैनिक या ईवनिंगरस कहा जाता है। मिड-डे पत्र तथा ईवनिंगरस चार से छ: पेज के होते हैं तथा आकार में दैनिक समाचार पत्रों से छोटे होते हैं।

2) साप्ताहिक पत्र :

यह पत्र या पत्रिकाएँ एक सप्ताह के समाचारों को गहन विश्लेषणात्मक लेखों के रूप में प्रकाशित करते हैं। सामान्यत: यह पत्र-पत्रिकाएँ हर रविवार को प्रकाशित किए जाते हैं। वैसे प्रकाशन का दिन व्यवस्थापक अपनी सुविधानुसार निश्चित करते हैं। ये साप्ताहिक विभिन्न विषयों से संबंधित होते हैं। जनता को नई जानकारी प्रदान करने हेतु साप्ताहिक का प्रकाशन किया जाता है।

3) पाक्षिक पत्र :

पंद्रह दिनों के अंतराल पर प्रकाशित समाचार पत्र पाक्षिक कहलाते हैं। कुछ समय पूर्व तक पाक्षिक पत्र के प्रति पाठकों की अधिक रुचि थी। टी. वी. चैनलों की बाढ़ से इन समाचार पत्रों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। फिर भी आज भी पाक्षिक समाज में विभिन्न विषयों की जानकारी देते हैं। पंद्रह दिन के समाचार भी प्रकाशित इसी पत्र में प्रकाशित होते हैं।

4) मासिक पत्रिकाएँ :

मासिक समाचार पत्रिकाओं में देश-विदेश के महत्त्वपूर्ण समाचारों पर विस्तृत रिपोर्ट तथा अन्य जन उपयोगी विषयों पर विशेषज्ञ द्वारा लिखे गए लेख इन पत्रिकाओं की विषयवस्तु होती है। इन पत्रिकाओं में कागज यथासंभव अच्छी किस्म का उपयोग किया जाता है तथा उत्कृष्ट रंगीन चित्रों के माध्यम से पाठकीय आकर्षण पैदा किया जाता है। कतिपय मासिक पत्रिकाओं में मनोरमा कहानियों का उल्लेख किया जा सकता है।

5) द्वि-मासिक, त्रैमासिक तथा छमाही पत्रिकाएँ:

इन पत्रिकाओं का प्रकाशन किन्हीं विशिष्ट विषयों से संबंधित लेखों व शोध कार्यों के लिए किया जाता है। साहित्य से संबंधित पत्रिकाएँ सामान्यत: दो, तीन अथवा छ: माह के अंतराल पर प्रकाशित की जाती है। जैसे आलोचना,'बहुबचत आदि।

6) अनियमित कालीन:

VIVEKANAND COLLEGE * ESTD JUNE 1964 * KOLHAPUR-416 003

Scanned by CamScanner

यह पत्रिकाएँ एक या दो वर्षों में एक बार प्रकाशित होती है। इनमें गंभीर मुद्दों पर चिंतनशील लेखों का समावेश होता है। यह सर्वकालिक होती है और शोधकर्ताओं के लिए ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में कार्य करती है। इसमें साहित्य से संबंधित विशेषांक सामान्यत: कई सालों के अंतराल बाद प्रकाशित किए जाते हैं।

सावधि पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजनात्मक सामग्री का लेखन के संदर्भ में निम्नलिखित तत्व ध्यान में रखनी चाहिए। सावधि पत्रिकाओं के लेखन के लिए सरल शब्दों और सरल वाक्य सरंचना का प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार के लेखन में शब्द बहुलता से बचना तथा कठिन एवं तकनीकी शब्दों से बचना चाहिए। विशेषणों का प्रयोग कम मात्रा में होना चाहिए। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों में प्रवाहशीलता, निरंतरता निहित होनी चाहिए, जिसमें वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण का होना जरूरी है।

सावधि पत्रिकाओं के ज्ञानवर्धक लेखन में गंभीरता, रोचकता, उद्देश्यपूर्णता, मानवी संवेदना एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति हो जानी चाहिए। इस प्रकार के लेखन में मनुष्य के विचारों को नई दिशा मिल जानी चाहिए। मौलिकता, सत्यता, विश्वसनीयता, शीर्षक की सटीकता, कल्पनात्मकता, जिज्ञासा की तृष्टि और ज्ञान की वृद्धि इस लेखन से हो जानी चाहिए। इस लेखन में भाषा शैली के विभिन्न प्रयोग से पाठकों का मनोरंजन किया जा सकता है।

विषय और अपने प्रभावशाली लेखन से पाठकों मनोरंजन इस लेखन सामग्री में अनिवार्य है। मनोरंजनपूर्ण तरीके से सूचनाओं में पाठकों का मनोरंजन प्रभावी लेखन से ही संभव है। यह लेखन पाठकों की रुचि को बढ़ावा देता है। इसमें सरल, संक्षिप्त, निश्चित अर्थयुक्त शब्दावली का प्रयोग होना चाहिए। इसके अलावा इसमें उचित शब्दों के लिए शब्दकोश व समांतर कोश का प्रयोग किया जाना चाहिए। साथ ही इसमें सटीकता के साथ विश्वसनीयता भी अनायास ही आ जाती है। ध्यानकर्षण की क्षमता, पाठकों की रुचि, इच्छा जागृति, सुस्पष्ट संदेश प्रेषण, शब्द ज्ञान का विस्तार आदि से मनोरंजक सामग्री लेखन में रोचकता आ जाती है।

निश्चित अवधि में प्रकाशित पत्रिकाओं सावधि पत्रिकाओं का लेखन करते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रकार के लेखन में शीर्षक आकर्षक हो, समाचार एवं आलेख की आत्मा प्रकट करने वाला हो, भाषा सहज एवं सरल हो, उसमें संपूर्णता हो, शीर्षक - समाचार में साम्य हो तो यह लेखन पाठकों को भा जाता है। इसके अलाव इसमें नतूनता, सहजता, कोतुहलता, समीपता, रहस्य आदि का होना अनिवार्य है।

© डॉ. दीपक तुपे

- मई 13, 2020 कोई टिप्पणी नहीं:

गुरुवार, 7 मई 2020

अखबारी विज्ञापन - चिरंजीत - डॉ. दीपक तुपे

3.1 उद्देश्य :

- चिरंजीत के व्यक्ति एवं वाङ्मय से परिचित होंगे।
- पति-पत्नी के रिश्तों को समझ जाएँगे।
- स्वस्थ पारिवारिक संबंध बन जाएँगे।
- मानवी रिश्तों-नातों के संदेह, आशंका और गलतफहमी दूर हो जाएगी।

3.2 प्रस्तावना :

अखबारी विज्ञापन चिरंजीत की हास्य-व्यंग्यात्मक एकांकी है। आज का युग विज्ञापन का युग है। मानव जीवन में जीवनोपयोगी एवं जीवनावश्यकताओं का प्रकटीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम विज्ञापन है। आधुनिक युग में मानव जीवन की सुख-दुःख की अभिव्यक्ति सशक्त माध्यम विज्ञापन माना जाता है। इसलिए आज हम हर चीज एवं आवश्यकता का समाधान विज्ञापन के द्वारा खोजते हैं। नौकरी, शादी-ब्याह, कामकाज संबंधी, क्रय-विक्रय जैसे जरूरतें एवं आवश्यकताएँ भी विज्ञापन का रूप धारण करने लगी है। ऐसे में विज्ञापन की एक छोटी-सी भूल भी मानव जीवन में कितना बड़ा बवंडर खड़ा कर देती है; इसका सशक्त उदाहरण चिरंजीत की 'अखबारी विज्ञापन एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में विज्ञापन की एक छोटी भूल पति-पत्नी के बीच गलतफहमी पैदा करता है, जिससे दोनों के बीच में संदेह की स्थिति पैदा होती है और आखिरी में विज्ञापन की गलती दूर होते ही हास्य-व्यंग्य के फवारे फूट जाते हैं और समस्या का समाधान भी हो जाता है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR 416003 ESTD JUNE 1964

3.3 विषय विवेचन :

3.3.1. चिरंजीत का परिचय:

एकांकीकार चिरंजीत आकाशवाणी से जुड़े रहकर बहुताधिक नाटक-एकांकी की रचना करने वाले ख्यातिकीर्त रेडियो नाटककार है। उन्होंने हास्य-प्रधान, गंभीर, रोमांचक और दुखांत नाटक लिखे हैं। चिरंजीत का जन्म 18 दिसंबर, 1919 को पंजाब के अमृतसर के एक ठाकुर

Scanned by CamScanner

परिवार में हुआ। चिरंजीत ने सन् 1938 ई. में कवि के रूप में अपने लेखन का प्रारंभ किया। उन्होंने एकांकी, नाटक, कविता, हास्य कथा और बाल-साहित्य की लगभग डेढ़ दर्जन से अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे पत्रकारिता, रेडियो नाटक, एकांकी लेखन से आजीवन जुड़े रहें। उन्होंने 'साप्ताहिक वीर अर्जुन,'साप्ताहिक जनसत्ता और'मासिक मनोरंजन' जैसी पत्रिकाओं का सफल संपादन किया। एक सफल नाटककार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाते हुए आकाशवाणी के केंद्रीय नाटक विभाग के चीफ प्रोड्यूसर जैसे सर्वोच्च पद को विभूषित कर दिसंबर 1979 में सेवानिवृत्त हो गए। सन् 1982-1984 से उन्होंने दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के प्रोड्यूसर एमेरिटस के मानद पद पर नियुक्त रहे हैं और प्रसिद्ध साहित्यिक मासिक पत्रिका 'सर्वप्रिय का संपादन भी रहें।

चिरंजीत की 50 से अधिक रेडियो एकांकियों का प्रसारण हो चुका है। इसी कारण रेडियो नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में उन्हें सबसे अधिक ख्याति मिली है। इसमें सन् 1965 तथा 1979 में भारत-पाकिस्तान युद्धों का दौरा जारी था। ऐसे समय पर देशभर के आकाशवाणी केंद्रों से उनका'ढोल की पोल' व्यंग्य नाटक प्रसारित हुआ। उसमें 'रंगारंग' एकांकी संग्रह की 'ब्याह की धमू,'खजाने का साँप, 'मेहमान, 'अखबारी विज्ञापन,'होली आई रे लला,'पतझड़ की एक रात,'मकान, बह आया,'सड़क पर, 'साथवाला,'पतित पावन'आदि एकांकियाँ उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने नाटकों में विभिन्न विषयों को प्रस्तुति देते हुए मनोरंजन को प्रधानता दी है। उनके कुछ नाटक चरित्रांकन पर विशेष बल देते हैं तो कुछ नाटक सामाजिक रूढ़ि-परंपरा, अंधविश्वास और विसंगतियों का पर्दाफाश करते हैं। शिल्पगत विविधता उनके नाटकों की खास विशेषता रही है। उनका हर नाटक किसी-न-किसी रहस्य को खोल देता है। उनके नाटक एवं एकांकी के कथानक आकस्मिक मोड़ लेते हुए हास्य-व्यंग्य पैदा करते हैं, पाठकों के मन में गुदगुदी पैदा करते हैं। उनके नाटक एवं एकांकी की भाषा सरल, सहज, प्रवाहमयी है। उनकी भाषा में बोलचाल के शब्दों का अधिक प्रयोग दिखाई देता है। उनकी भाषा में वाकपटुता एवं हास्य-व्यंग्य का पुट नजर आता है। सन् 1972 ई. में चिरंजीत को राष्ट्रपति के हाथों पद्मश्री खिताब से पुरस्कृत किया गया।'दादी माँ जागी' दूरदर्शन नाटक ने उन्हें बहुत लोकप्रियता दी। दिल्ली अकादमी की ओर से चिरंजीत को सर्वश्रेष्ठ नाट्य कृति के रूप में सम्मानित किया गया। चिरंजीत को रेडियो नाटक के माध्यम से बहुत प्रसिद्धि मिली। इसलिए उनका सेवाकाल भारतीय रेडियो नाटक के इतिहास का 'चिरंजीत युग' कहलाता है।

3.3.1. अखबारी विज्ञापन का कथानक :

चिरंजीत लिखित अखबारी विज्ञापन यह एक रेडियो एकांकी है; जो विज्ञापन की बॉक्स नंबर की गलती के कारण पैदा हुई समस्याओं का बेहतरीन चित्रण प्रस्तुत करता है। एकांकी का नायक मदनमोहन है; जोंकि एक प्राइवेट फर्म बिज्जामल-गिज्जामल में टाइपिस्ट है। उसकी उम्र 30-32 वर्ष की है। उसे महावार 100 रुपए तनख्वाह मिलती है। महँगाई के जमाने में उसे सौ रुपए में घर चलाना मुश्किल हो रहा है; इसलिए वह अधिक वेतन की दूसरी नौकरी पाने हेतु 'नेशनल' पत्रिका में विज्ञापन देता है। विज्ञापन का मजमूजन इस प्रकार है। 'नौकरी चाहिए-एक योग्य तथा अनुभवी टाइपिस्ट को, जो शार्टहैंड भी जानता है। आजकल एक प्रसिद्ध फर्म में काम कर रहा है। अधिक वेतन के लिए परिवर्तन चाहता है। पत्र-व्यवहार के लिए पता-बॉक्स नंबर 3111, मार्फत 'नेशनल पत्रिका। विज्ञापन जारी होने के सात दिन बाद मदनमोहन पंडित जी से अपनी नौकरी का भविष्य जानने की कोशिश करता है। कुंडली, जन्मपत्री, सिंह राशि, शुभमुर्हत, भाग्यवृद्धि, यजमान, नया संबंध आपके लिए शुभयोग होगा आदि बातें दुर्गा दरवाजे के पीछे से चोरी-छिपे सुनती है और इन सारी बातों से उसके मन में संदेह करती है कि उसका पति मदनमोहन दूसरी शादी करना चाहता है। इसी कारण दुर्गा पंडित जी और मदनमोहन पर बहुत ही क्रोधित हो जाती है और दोनों को भलाबुरा कहती है। दोनों दुर्गा को बहुत समझाने की कोशिश करते हैं, मगर वह नहीं मानती। वह पंडित जी से कहती है - मुझसे ही रोज दान-दक्षिणा लेकर मेरा ही सत्यानाश करने निकले हो, कुंडली देखी, शुभ मुहूर्त सोच लिया, लग्न घड़ी तय कर ली और अब अनजान बनकर पूछते हो, दूसरी शादी कैसी? और वह उन्हें गालियाँ देने लगती है। पंडित जी से कहने लगती है कि जिस थाली में आप खाते हैं, उसी में छेद करते हो, शर्म नहीं आती? मेरी ही छाती पर मूँग दलने के लिए सौत लाई जा रही है।' पंडित जी दुर्गा को समझाने का प्रयास करते हैं, मगर लाख समझाने के बावजूद वह नहीं मानती। वह अपने पति मदनमोहन के पीछे पड़ती है और कहती है कि वह दूसरी औरत की तरह पति के पाँव की जूती नहीं कि जी चाहा तो पहन लो, जी चाहा तो उतार कर फैंक दो। मुझमें आखिर क्या दोष है। लूली हूँ, लंगड़ी हूँ, अंधी हूँ या बदसूरत हूँ...?' यह विवाद बढ़ता हुआ देख पंडित जी जैसे-तैसे अपना पोथी-पत्रा समेटकर भाग जाते हैं। फिर भी जाते समय दुर्गा पंडित जी को घर में कदम न रखने, दान-दक्षिणा और पुरोहिताई बंद करने की हिदायत देती है। इतना होने के बावजूद मदनमोहन आटा लाने की बात करता है तब वह कहती है अब तुम आटा नई घरवाली के आने पर ही लाना। वही आकर खाना बनाएगी और तुम्हें दफ्तर भेज देगी। वह यह भी कहती है कि कैसे सौ रुपल्ली में दो बीवियों का खर्चा चलाते हो। मदनमोहन 'नेशनल' पत्रिका का अंक उठाकर अखबार में छपा विज्ञापन उसे दिखाता है। दुर्गा उसे ध्यान से पढ़ती है और पूछती है कि कैसे मान लू कि यह विज्ञापन का बॉक्स नंबर 3111 तुम्हारा ही दिया हुआ है। नेशनल पत्रिका में बॉक्स नंबर 311 है; जोंकि शादी की नई बीवी की तलाश का है।

पति-पत्नी के बीच जारी विवाद के बीच डाकिया आता है और एक लिफाफा देकर चला जाता है। वह लिफाफा स्वयं मदनमोहन नहीं खोलता क्योंकि दुर्गा उसे हाथ की सफाई कहेगी, इसलिए वह दुर्गा को ही लिफाफा खोलने और खुद सच्चाई अवगत करने की बात करता है। 'नेशनल' पत्रिका द्वारा प्राप्त लिफाफा खोलकर और अंदर की चिट्ठियाँ देखकर दुर्गा का गुस्सा

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964 KOLHAPUR-416003

Scanned by CamScanner

और उबल पड़ता है क्योंकि लिफाफे में पांच रूपवती एवं गुणवती कन्याओं की शादी अर्जियाँ थी। यह देखकर मदनमोहन चौंक जाता है और हैरत से हक्का-बक्का-सा रह जाता है। दुर्गा मदनमोहन को फोटो उठाते हुए कहती है, यह तो बिल्कुल फिल्म-ऐक्ट्रेस मालूम पड़ती है। क्या रूप पाया है इसने। दूसरी मेरठ वाली है उसने तो बाप, भाई या अभिभावक को बिना बताए खुद ही अर्जी भेज दी है। प्रोफेसर होने की वजह से फारवर्ड मालूम होती है। इस बीच, मदनमोहन गिड़गिड़ाते हुए दुर्गा से सच बताने और उसका यकीन करने की नाकाम कोशिश करता है। वह पति की एक भी बात नहीं सुनती। वह शादी का विज्ञापन देने और लड़की वालों को गुमराह करने का बड़ा अपराध मानती है और सबके पते पर पत्र लिखकर उनके घरवालों को असलीयत अवगत कराना चाहती है। पति मदनमोहन से वह मुँहतोड़ जवाब देती है, 'मैं और स्त्रियों की तरह बेजबान गाय-बकरी नहीं, जो चुपचाप यह अत्याचार सहन कर लूँ। मेरा रोम-रोम प्रतिहिंसा की ज्वाला से जल रहा है। मेरे जीते-जी तुम दूसरी शादी नहीं कर सकते। 27-28 साल की दुर्गा रनचंडी का अवतार धारण करते हुए पति हिदायत देती है कि'दूसरी शादी होने से पहले मैं तुम्हें मारकर खुद फाँसी पर लटक जाऊँगी। इतने में दरवाजे पर दस्तक होती है। वह पत्नी को अंदर जाने के लिए कहता है, मगर दुर्गा नहीं मानती। मदनमोहन जब दरवाजा खोलता है तब सामने 'नेशनल' पत्रिका से अखबार का मैनेजर था, जोकि अपने दफ्तर की गलती की क्षमा माँगने आया था। इससे चिट्ठियों का रहस्य खुल जाता है। मैंनेजर बताता है कि टाइपिस्ट की भूल से बाक्स नंबर 3111 के बदले 311 बॉक्स नंबर लिखा गया। इस गड़बड़ी के कारण चिट्ठियों की हेराफेरी हो गई। मदनमोहन जी ने नौकरी के लिए विज्ञापन दिया था। इसमें इनकी कोई गलती नहीं है और मैंने टाइपिस्ट को बरखास्त कर दिया है। यदि आप चाहे तो उसकी जगह पर दो सौ रुपए मासिक वेतन पर हमारे दफ्तर में काम कर सकते हो। मदनमोहन यह नौकरी सहर्ष स्वीकार करता है, मगर आज के बदले वह कल काम शुरू करना चाहता है क्योंकि पंडित जी को बुलाकर वह दुर्गा के साथ दूसरी शादी करना चाहता है। मैंनेजर कहता है कि इसके लिए आपको हमारे अखबार में विज्ञापन देना होगा। इस पर सब हँसते हैं। टाइपिस्ट की नौकरी का शुभसंदेह पति-पत्नी को प्रसन्न कर देता है और दोनों में फिर से स्नेह एवं विश्वास में दृढ़ हो जाता है। प्रस्तुत एकांकी रेडियो पर भी प्रसारित हो चुका है और कई बार रंगमंच पर भी खेला गया है। प्रस्तुत एकांकी में नायक के रूप में मदनमोहन, नायिका के रूप में दुर्गा और पंडित मुख्य पात्र है जबकि गौण पात्र के रूप में मैनेजर और डाकिया आ जाते हैं। एकांकी में भावों के उतार-चढ़ाव के अनुसार शब्द प्रयोग दिखाई देता है। संवाद एकांकी का प्राणतत्व है, जो एकांकी का सौंदर्य को बढ़ावा देता है। कथानक में गति है, जो लक्ष्य की ओर ले जाती है। विज्ञापन की एक छोटी-सी भूल के माध्यम से हास्य-व्यंग्य का ताना-बाना बहुत बेहतरीन तरीके से बुना गया है। एकांकी में आदि से लेकर अंत तक जिज्ञासा एवं कौतुहल बना रहता है। यह एक सफल एकांकी है।

सारांश यह कि एकांकीकार चिरंजीत ने 'अखबारी विज्ञापन' एकांकी के माध्यम से स्पष्ट किया है कि आधुनिक युग के विज्ञापन की छोटी-सी भूल पति-पत्नी के बीच संदेह, आशंका और गलतफहमी पैदा करती है और इसी गलतफहमी से संघर्ष एवं अविश्वास का माहौल बन जाता है जिसके कारण पति-पत्नी एक-दूसरे की जान लेने के लिए उतारू हो जाते हैं। यदि पति-पत्नी के जीवन में संदेह, आशंका और गलतफहमी वास करती है तो वह संघर्ष का कारण बन जाती है। यही संघर्ष की भावना उग्र रूप धारण करती है। जब तक संदेह, आशंका और गलतफहमी दूर नहीं होती तब तक पति-पत्नी के बीच अनबन, झगड़ा और विवाद की स्थिति बनी रहती है और जैसे ही गलतफहमी दूर हो जाती है तो पति-पत्नी के बीच स्नेह, प्यार और विश्वास की डोर कायम हो जाती है। इसलिए पति-पत्नी का एक-दूसरे के बीच संदेह, आशंका और गलतफहमी की जगह पर विश्वास और प्रेम होना बहुत ही मायने रखता है।

3.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न:

1) मदनमोहन ------ फर्म में टाइपिस्ट था।
   क) बिज्जामल-गिज्जामल ख) बिज्जामल ग) गिज्जामल घ) नेशनल
2) रेडियो नाटककार के रूप में ------ प्रसिद्ध है?
   क) मन्नू भंडारी ख) चिरंजीत ग) सफदर हाशमी घ) कमलेश्वर
3) मदनमोहन का बाक्स नंबर ---- था।
   क) 3111 ख) 311 ग) 313 घ) 131
4) चिरंजीत को सन् 1979 ई. में भारत सरकार द्वारा ---- उपाधि से अलंकृत किया गया।
   क) पद्मश्री ख) पद्मभूषण ग) पद्म घ) भारतरत्न
5) मदनमोहन को --- बाक्स नंबर की चिट्ठियाँ भेजी गई।
   क) 3111 ख) 311 ग) 313 घ) 131
6) 'दूसरी शादी होने से पहले मैं तुम्हें मारकर खुद ------ पर लटक जाऊँगी।'
   क) फाँसी ख) पेड़ ग) शेड घ) इमारत
7) 'मेरे जीते-जी तुम दूसरी ---- नहीं कर सकते।'
   क) पत्नी ख) शादी ग) नौकरी घ) सौतन
8) 'दुर्गा, मेरी बात पर ----- करो, यह विज्ञापन मैंने नहीं दिया।'
   क) विश्वास ख) भरोसा ग) गौर घ) चिंतन
9) 'नेशनल पत्रिका के ही दफ्तर से ---- आई है, भगवान ने मेरी लाज रख ली।'
   क) फोटो ख) अर्जियाँ ग) चिट्ठी घ) पत्रिका
10) 'दुर्गा, तुम्हें बेकार का ----- हो गया है।'
   क) अहम ख) वहम ग) रहम घ) गम

VIVEKANAND COLLEGE ESTD JUNE 1964

https://dipaktupe.blogspot.com

Scanned by CamScanner

11) 'जिस स्त्री की छाती पर मूँग दलने के लिए सौत लाई जा रही हो, वह गालियाँ न देगी, तो क्या ------ देगी?'
क) असीसें ख) आशीर्वचन ग) गालियाँ घ) वरदान
12) 'मैं दूसरी ------ की तरह पति के पॉव की जूती नहीं कि जी चाहा तो पहन लो, जी चाहा तो उतार कर फेंक दी।'
क) पत्नी ख) औरत ग) नारी घ) सौतन
13) 'अजी, गड़बड़ तो ----- वाली ने कर डाली है।'
क) कानपुर ख) मेरठ ग) दिल्ली घ) जयपुर
14) 'मेरी बेटी हजारों में है - रूपवती, ---- ।'
क) कलावती ख) गुणवती ग) सदाचारिणी घ) धनवती
15) 'रहने दो यह अपना बहुरूपियापन! आज मैंने आपका ----- रूप देख लिया है।'
क) झूठा ख) असली ग) वास्तविक घ) बेढंगा

3.5. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्नों के उत्तर:

1) क) बिज्जामल-गिज्जामल, 2) ख) चिरंजीत, 3) क) 3111, 4) क) पद्मश्री , 5) ख) 311, 6) क) फाँसी, 7) ख) शादी, 8) क) विश्वास, 9) ग) चिट्ठी, 10) ख) वहम, 11) क) असीसें, 12) ख) औरत, 13) ख) मेरठ, 14) ख) गुणवती, 15) ख) असली।

3.6. स्वाध्याय :

1) अखबारी विज्ञापन' एकांकी की कथावस्तु लिखिए।
2) मदनमोहन का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3) दुर्गा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4) अखबारी विज्ञापन' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
5) अखबारी विज्ञापन' नाटक की भाषा-शैली स्पष्ट कीजिए।
6) अखबारी विज्ञापन' एकांकी में चित्रित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
7) अखबारी विज्ञापन' एकांकी के संवादों की चर्चा कीजिए।

#अखबारी विज्ञापन#चिरंजीत# डॉ. दीपक तुपे# © डॉ. दीपक तुपे

- मई 07, 2020 कोई टिप्पणी नहीं:

स्तंभ लेखन की विशेषताएँ - डॉ. दीपक तुपे

पाठककीय जड़ता, शुष्कता, निरसता तोड़ने के लिए समाचार पत्रों में विभिन्न विषयों पर विभिन्न स्तंभों की योजना बनाई जाती है। स्तंभ लेखककार पाठकों का स्वाद निरंतर बनाए रखने और नई पठनीय सामग्री प्रदान करने के लिए रोचकता, जिज्ञासा एवं कौतुहल सहारा लेता है। स्पष्टता, संक्षिप्तता, सत्यता एवं सुरुचि के माध्यम से पाठकों का ध्यान निरंतर बनाए रखने के लिए समाचार पत्रों में लेखक स्तंभ लेखन करता है। यही स्तंभ समाज में पाठकों को विभिन्न विषयों के माध्यम से विभिन्न विचारों से समृद्ध करते हैं। स्तंभ लेखन की अनेक विशेषताएँ हैं, जिनका विवेचन विश्लेषण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है-

1) **विचारों की प्रधानता :** स्तंभ लेखन में विचारों की प्रधानता होनी चाहिए। स्तंभ लेखन में प्रकशित घटना एवं प्रसंग द्वारा समाज को निश्चित एक विचार मिल जाना चाहिए। स्तंभ लेखन का मुख्य उद्देश्य है कि समाज के बुरे विचार दूर करना और अच्छे विचार समाज में पिरोहित करना। स्वस्थ समाज के लिए स्तंभ लेखन के माध्यम से मानवतावादी विचारों की पहल होनी चाहिए। स्पष्ट है कि स्तंभ लेखन में भावनाओं से अधिक विचारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।
2) **वस्तुनिष्ठता एवं सत्यता :** समाचार प्रकाशित स्तंभ लेखन में सत्यता का होना अनिवार्य है। स्तंभ लेखन में निहित घटना एवं प्रसंग यदि सत्य है तो पाठक रुचि से स्तंभ पढ़ता है। वस्तुनिष्ठता के कारण स्तंभ लेखन में यथातथ्य की रक्षा होती है। घटना एवं प्रसंग का यथावत वर्णन ही स्तंभ लेखन की वस्तुनिष्ठता एवं सत्यता का प्रमाण है।
3) **स्पष्टता :** स्तंभ लेखन में स्पष्टता होने पर स्तंभ लेखन सफल हो जाता है। स्तंभ लेखन को सुंदर एवं श्रेष्ठ बनाने वाले तत्त्व स्पष्टता में निहित होते हैं। स्तंभ लेखन में अस्पष्टता, संदिग्धता, क्लिष्टता, कठिनता, जटिलता और बोझिल शब्दों की योजना एवं भाषा की संरचना नहीं होनी चाहिए। आशय एवं विषय की गरीमा बनाए रखने के लिए स्तंभ लेखन में स्पष्टता एक महत्वपूर्ण विशेषता है।
4) **निरंतरता:** स्तंभ लेखन की निरंतरता पाठकों की रुचि को बढ़ावा देती है। स्तंभ लेखन में निहित घटना या प्रसंग का वर्णन सूत्रबद्ध तरीके से हो जाना चाहिए। स्तंभ के लेखन में प्रवाहमयता, श्रृंखलाबद्धता एवं क्रमबद्धता का होना अनिवार्य तत्व है। स्तंभ लेखन में

https://dipaktupe.blogspot.com

Scanned by CamScanner

निहित शब्द-शब्द में , पद-पद में और वाक्य-वाक्य में एक सिलसिला होना चाहिए। स्तंभ लेखन की लयबद्धता से उसमें निरंतरता आ जाती है।

5) **नवीनता :** यथाशक्ति नवीनतम जानकारी स्तंभ लेखन की घटना एवं प्रसंग की संप्रेषण क्षमता के प्रति पाठकों को आश्वस्त कर देती है और पाठकों की उत्सुकता बढ़ा देती है और यही उत्सुकता संतोष देती है। स्तंभ लेखन में नई बात या नवाचार ही पाठकों की रोचकता को बढ़ावा देता है, इसलिए उसमें नवीनता अनिवार्य रूप से आ जानी चाहिए।

6) **संपूर्णता :** स्तंभ लेखन में अपने आप में संपूर्णता का होना अनिवार्य है। स्तंभ लेखन पढ़ने के बाद कोई भी आशंका मन में नहीं रहनी चाहिए। स्तंभ में वर्णित घटना एवं प्रसंग से संबंधित सारी समस्याओं का समाधान हो जाना चाहिए। यदि स्तंभ पढ़ने के बाद पाठक की समग्र जिज्ञासाओं की तुष्टि नहीं करता तो मान लेना चाहिए कि स्तंभ अधूरा है, वह पूर्ण नहीं है। इसलिए संपूर्णता स्तंभ लेखन की विशेषता महत्वपूर्ण विशेषता है।

7) **समीपता:** स्तंभ लेखन का निकटता एवं समीपता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। श्रेष्ठ एवं सफल स्तंभ लेखन में स्थानीयता का रंग होना चाहिए। स्तंभ लेखन की निकटता में अभिव्यक्ति, भाव, विचार, अर्थ और कथ्य आदि की निकटता होनी चाहिए। यही निकटता औचित्यपूर्ण, प्रसंगानुकूलता और संदर्भ सापेक्षता का पूरा-पूरा खयाल रखा जाना जरूरी है। स्तंभ लेखन की निकटता से ही वह सफल बन जाता है।

8) **सरलता :** स्तंभ लेखन का सीधा संबंध सहजता एवं सरलता है। स्तंभ लेखन की अभिव्यक्ति में कहीं भी कसाव, खींचतान नहीं होनी चाहिए। सहजता के अभाव में स्तंभ लेखन में जड़ता, शुष्कता एवं निरसता आती है। भाषिक संरचना, प्रकृति, व्याकरण, सभ्यता एवं संस्कृति आदि का पूरा-पूरा खयाल रखने पर स्तंभ लेखन में सरलता एवं सहजता आ जाती है। इसमें अस्वाभाविकता, जटिलता, कठिनता नहीं होनी चाहिए।

9) **संप्रेषणीयता :** स्तंभ लेखन में विचारों में सहज संप्रेषण होना चाहिए है। स्तंभ लेखककार सहज-सरल, सीधी और बोलचाल की भाषा का प्रयोग करता है तो स्तंभ लेखन में संप्रेषणीयता आ जाती है। स्तंभ लेखन की भाषा में स्पष्टता, सहजता एवं सरलता आ जाने पर अनायास ही उसमें संप्रेषणीयता आ जाती है। यदि स्तंभ बोधगम्य है तो वह सफल हो जाता है। स्तंभ लेखन में दुर्बोध, अनेकार्थी एवं संदेहार्थी शब्दों के प्रयोग से संप्रेषणीयता को क्षति पहुँचती है। संप्रेषणीयता से विचारों की अभिव्यक्ति सहज संभव हो जाती है।

10) **सजीवता :** स्तंभ लेखन में सजीवता या जीवंतता अनिवार्य विशेषता है। विश्वसनीयता और यथातथ्य की रक्षा से ही स्तंभ लेखन में सजीवता या जीवंतता ला देती है। घटना एवं प्रसंग का यथातथ्य विवरण स्तंभ लेखन में सजीवता ला देता है।

11) **जिज्ञासा:** स्तंभ लेखन का विषय अधिकतर लोगों की उत्कंठा, उत्सुकता और अभिरुचि को बढ़ावा देने वाला होना चाहिए। जन अभिरुचि के अनुकूल घटना एवं प्रसंगसे बहुसंख्य पाठक अभिभूत हो जाते हैं। अविश्वसनीय एवं रुचिहीन घटना स्तंभ लेखन की रोचकता में हानि पहुँचा देती है। इसलिए स्तंभ लेखन में रोचकता एवं जिज्ञासा का होना अनिवार्य विशेषता है।

12) **जन कल्याण:** स्तंभ लेखन में लोक-प्रतिष्ठा या लोगों के हित की रक्षा हो जानी चाहिए। स्तंभ लेखन का विषय अधिकांश जनहित का हो तो अनायास ही स्तंभ लेखन में लोगों के हित की रक्षा हो जाती है। स्तंभ लेखन में निहित विचार यदि संयमित भाषा में होता है तो उसमें लोकहित की रक्षा हो जाती है। स्तंभ लेखन में जन-अभिरुचि तब बनती है जब उसका विषय अधिकांश लोगों से संबंधित एवं उनके हित का हो।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि स्तंभ लेखन में विचारों की प्रधानता, वस्तुनिष्ठता एवं सत्यता, स्पष्टता, निरंतरता, नवीनता, संपूर्णता, समीपता, निकटता, सहजता, सरलता, संप्रेषणीयता, सजीवता, जीवंतता, रोचकता, जिज्ञासा और लोकहित की रक्षा आदि विशेषताओं का होना अनिवार्य होता है। तभी स्तंभ लेखन जन रुचि, लोकहित का हो जाता है और सफल भी हो जाता है।

#स्तंभ लेखन#स्तंभ#स्तंभ लेखन की विशेषताएँ#

© डॉ. दीपक तुपे

- मई 07, 2020 कोई टिप्पणी नहीं:

VIVEKANAND CO... KOLHAPUR-416... ESTD JUNE 1964

मुख्यपृष्ठ

सदस्यता लें संदेश (Atom)

वर्तमान संदर्भ में तकनीकी शिक्षा की भूमिका

डॉ. दीपक रामा तुपे सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त) वर्तमान संदर्भ में तकनीकी शिक्षा की अहम ...

Scanned by CamScanner

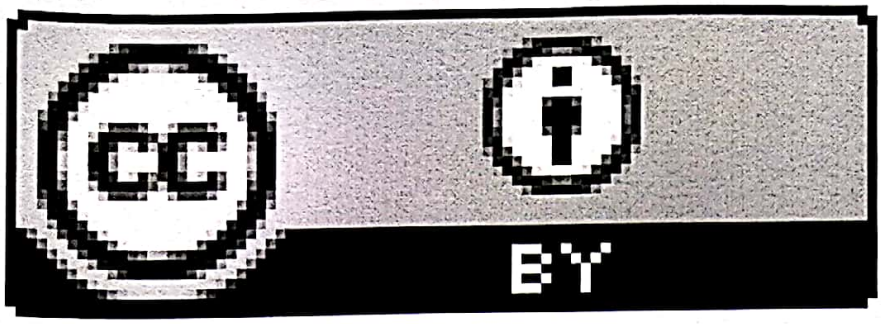

अखबारी विज्ञापन - चिरंजीत - डॉ. दीपक तुपे
3.1 उद्देश्य : Ø चिरंजीत के व्यक्ति एवं वाङ्मय से परिचित होंगे। Ø पति-पत्नी के रिश्तों को समझ जाएँगे। Ø स्वस्थ पारिवारिक संबंध ब...

स्तंभ लेखन की विशेषताएँ - डॉ. दीपक तुपे
पाठककीय जड़ता, शुष्कता, निरसता तोड़ने के लिए समाचार पत्रों में विभिन्न विषयों पर विभिन्न स्तंभों की योजना बनाई जाती है। स्तंभ लेखककार पाठकों...

सावधि पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजनात्मक सामग्री का लेखन :
. सावधि पत्रिका यानी निश्चित अवधि में प्रकाशित होने वाली पत्रिका। इनमें दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्रिकाएँ, द्वि-म...

वाटरमार्क थीम. Blogger द्वारा संचालित.

Scanned by CamScanner